पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशित: 1.12.2013 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

।। ओ३म् ।।

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आर्य महासम्मेलन

में दिल्ली के बाहर से पधारने वाले महानुभाव अपने पहुंचने की तिथि, समय व संख्या से शीघ्र सूचित करें जिससे यथोचित प्रबन्ध किया जा सके। -दुर्गेश आर्य
आवास प्रबन्धक
09868664800

वर्ष-30 अंक-13 मार्गशीर्ष-2070 दयानन्दाब्द 190 1 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2013 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 1.12.2013, E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज, अरूण विहार, नोएडा का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न

बच्चों के निर्माण से ही सबल राष्ट्र का निर्माण होगा-**डा.अशोक कुमार चौहान**

स्मारिका का विमोचन करते मुख्य अतिथि डा. अशोक कुमार चौहान, समारोह अध्यक्ष डा.अनिल आर्य, श्री आनन्द चौहान, स्वामी यज्ञमुनि जी, डा.वीरपाल विद्यालंकार, मेजर जनरल श्री आर.के.एस.भाटिया, कर्नल रवि कुमार खन्ना, ले.कर्नल श्री कीमती लाल वर्मा, श्री योगेश्वरप्रसाद थपरियाल, श्री के.एस.तोमर।

रविवार, 17 नवम्बर 2013, आर्य समाज, अरूण विहार, सैक्टर-29, नोएडा का वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डा.अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि बच्चों के निर्माण से ही हमारा कल अच्छा होगा, यहां भारी संख्या में बच्चों को देखकर प्रसन्नता हुई है। यहां जो युवाओं के विकास व कल्याण के लिए गतिविधियां चल रही है, वह सराहनीय है। अन्य समाजों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिये। समारोह अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज चरित्रवान युवा पीढ़ी की आवश्यकता है, जो समाज को नयी दिशा दे सके। साथ ही सरकारी तुष्टिकरण की नीति की आलोचना करते हुए कहा कि हिन्दू समाज एक जुट होकर ही इस समस्या का मुकाबला कर सकता है। उन्होंने पारिवारिक सत्संगों की परम्परा को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। इस अवसर पर कर्मठ मेधावी बच्चों का स्वागत भी किया गया। ब्रि.श्री चितरंजन सांवत का भी ओजस्वी उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री योगेश्वरप्रसाद थपरियाल ने किया व श्री आर.के.एस. भाटिया ने आभार व्यक्त किया। श्री जे.सी.सेठ, श्रीमती आशा गांधी, कै. अशोक गुलाटी, माता लक्ष्मी सिन्हा, आचार्य अजेन्द्र शास्त्री, श्री राजनारायण आर्य, श्रीमती सन्तोष बाला, श्री सौरभ गुप्ता, श्री दिनेश सिंह आदि उपस्थित रहे।

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ व आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिए आगामी कार्यकर्ता बैठकें

1. उत्तर प्रदेश प्रान्तीय बैठक: रविवार, 8 दिसम्बर 2013, दोपहर 2.00 बजे, आर्य समाज, राज नगर, गाजियाबाद. उ.प्र.
2. मध्य दिल्ली बैठक: रविवार, 8 दिसम्बर 2013, सायं 5.00 बजे, आर्य समाज, देव नगर, आनन्द पर्वत, दिल्ली।
3. हरियाणा प्रान्तीय बैठक: शनिवार, 14 दिसम्बर 2013, प्रात: 11 बजे, आर्य समाज, सैक्टर-13, करनाल,हरियाणा।
4. उत्तर पश्चिमी क्षेत्र बैठक: शनिवार, 14 दिसम्बर 2013, सायं 5.00 बजे, आर्य समाज, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली-85।
5. राजस्थान प्रान्तीय बैठक: रविवार, 15 दिसम्बर 2013, प्रात: 11.00 बजे, कंचन वाटिका, निकट स्टेट बैंक, बहरोड़, अलवर, राजस्थान।

कृपया अपने निकट की बैठक में साथियों सहित पहुंचकर संगठन को बल प्रदान करें। **– महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री, फोन: 09013137070**

आर्य समाज पश्चिम विहार व लाजपत नगर में उत्साह की लहर

रविवार 24 नवम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 24, 25, 26 जनवरी 2014 को पीतमपुरा, दिल्ली में होने वाले 251 कुण्डीय विराट् यज्ञ व अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी के लिए आर्य समाज पश्चिम विहार में प्रधान श्री जगदीश नागिया व लाजपत नगर में प्रधान श्री राजेश मेहन्दीरता की अध्यक्षता में कार्यकर्ता बैठकें सौल्लास सम्पन्न हुई। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य के आह्वान पर सभी ने सम्मेलन को सफल बनाने का आश्वासन दिया। चित्र में श्री जगदीश नागिया का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री मदनमोहन सलूजा, श्री राजेन्द्र लाम्बा, श्री महेन्द्र बूटी, श्री सुरेन्द्र मानकटाला, श्री नरेन्द्र आर्य सुमन, श्री मायाराम शास्त्री व श्री मानवेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र में प्रधान श्री राजेश मेहन्दीरता व मंत्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री जितेन्द्र डावर,श्री दिनेश व श्री तलवार जी।

'महर्षि दयानन्द का संसार पर ऋण'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हमारा सौभाग्य है कि हम आधुनिक समय में रह रहे हैं। आज हमारे पास वाहन, बंगला, बैंक बैलेन्स, अन्य प्रकार के वाहन, रेल, कम्प्यूटर, मोबाइल, वायुयान, लौह पथ गामिनी रेल, बस व अच्छी सड़के हैं। घर के अन्दर ही पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। आवश्यकतानुसार सुन्दर, सुविधाजनक वस्त्रों की भी कमी नहीं है। हम अपने नगर, देश-विदेश में कुछ समय में ही आ जा सकते हैं। आजसे 200 वर्ष पूर्व दुनियां भर में सुख सुविधाओं की इतनी सामग्री विद्यमान नहीं थी। शायद् पानी पीने के लिए किसी नदी के किनारे जाना पड़ता रहा होगा या फिर श्रमिकों के द्वारा बड़े बर्तनों में मंगा कर इकट्ठा करना पड़ता होगा। भोजन चुल्हे में बनता था जिसमें जंगल से लकड़ियां प्राप्त करनी होती थी। तब शायद गैस-लाइटर व दिया-सलाई भी नहीं थी। चूल्हे का विकल्प कोयले से जलने वाली अंगेठी थी। आजकल की तरह एलपीजी गैस के चूल्हों का अस्तित्व नहीं था। हमें लगता है कि विद्युत के हीटर भी अधिक प्रयोग में नहीं थे क्योंकि विद्युत का उत्पादन कम था और हीटर बनाने वाले कुटीर या बड़े उद्योग नहीं बने थे। यह आम व्यक्ति के लिए एफार्डेबल भी नहीं थे। गेहूं या अनाज पीसने के लिए नदियों पर घराट बनाये जाते थे अथवा गेहूं व अनाज घर पर चक्की में पीसा जाता था जिसे घर के सदस्यों को स्वयं ही चलाना होता था। पन-चक्की या घराट आजकल की पीढ़ियों को देखने के लिए भी दुलर्भ हो गयें हैं। शायद कहीं इक्का-दुक्का दीख जायें। लोगों का पहनावा या वस्त्र भी सरल व भद्र होते थे। फैशन तब शायद नहीं था। लोगों का चरित्र अच्छा था। भ्रष्टाचार को शायद् लोग जानते ही नहीं थे। समय ने करवट ली, विकास हुआ और आज हमने अपनी आवश्यकता की प्रायः सभी वस्तुयें खोज लीं व बना लीं हैं। यदि समस्या है तो आज बीमारियां बहुत बढ़ गईं हैं। आजकल के समय में अनेक बिमारियां तो ऐसी हैं जिन्हें पुराने लोग जानते ही नहीं थे, उनका जीवन प्रायः स्वस्थ व निरोगी होता था। आज रक्तचाप, मधुमेह व कैंसर जैसी बीमारियों से प्रभावित रोगियों की संख्या इतनी अधिक हो गई हैं कि सरकार द्वारा इनके सही आंकड़े भी इकट्ठे करना असम्भव है।

मनुष्य जीवन की सुख-सुविधायें की जो-जो वस्तुयें आज उपलब्ध है इन्होंने निःसन्देह मनुष्यों का जीवन आसान व सुविधाजनक बना दिया है। यह विकास कैसे हुआ तो इसका उत्तर मिलता है कि यह सब विज्ञान के द्वारा सम्भव हुआ है। विज्ञान कहां से आया है, यह मुख्य विचारणीय प्रश्न है। विज्ञान कहते हैं भौतिक पदार्थों व वस्तुओं के बारे में विशिष्ट ज्ञान को। इस विशिष्ट ज्ञान या वैज्ञानिक ज्ञान का आधार हमारे वैज्ञानिक व उनकी भाषा होती है। यदि भाषा न हो तो वैज्ञानिक कुछ नहीं कर सकते अर्थात् यदि भाषा न होती तो वैज्ञानिकों ने जो बड़े-बड़े आविष्कार किये हैं, वह सम्भव नहीं थे। हम देखते हैं कि आधुनिक काल में अधिंकाश आविष्कार यूरोप के देशों में हुए हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह भी है कि जिन लोगों अर्थात् वैज्ञानिकों ने विज्ञान की उन्नति की है वह यूरोप में प्रचलित ईसाई मत की मान्यताओं, मुख्यतः ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि की उत्पत्ति विषयक, को महत्व नहीं देते थे न आज देते हैं। पाश्चात्य धार्मिक विद्वान ईश्वर व धर्म विषय में वैज्ञानिकों की शंकाओं, प्रश्नों व तर्कों का समाधान नहीं कर सकें। समाज में सभी को रहना पड़ता है पर यह जरूरी नहीं है कि किसी समाज में रहने वाले अपने पूरे ज्ञान व विश्वास से वहां प्रचलित मत को मानते हों। यूरोप के अधिकांश वैज्ञानिकों का भी यह गुण है कि जब तक कोई बात तर्क व प्रमाण के आधार पर सत्य सिद्ध न हो जाये, वहां के वैज्ञानिक उसे स्वीकार नहीं करते। यह भी एक, वहां विज्ञान की उन्नति होने का कारण है। हम समझते हैं कि महाभारत काल के बात हमारे देश में अव्यवस्था कायम हो गई जिसके कारण ज्ञान के क्षेत्र में अन्धकार फैल गया और एक के बाद दूसरा, फिर तीसरा व चौथा, इस प्रकार मत-मतान्तर बढ़ते गये। संसार को बनाने वाली सत्ता के वास्तविक स्वरूप को भुला दिया गया और इसके स्थान पर एक पाषाण की मूर्ति बनाकर उससे प्रार्थना, स्तुति आदि की जाने लगी जिससे ज्ञान प्रायः समाप्त हो गया व घोर अन्धकार ने सारे देश पर अधिकार जमा लिया। इन मत-मतान्तरों के कारण ज्ञान व विज्ञान की उन्नति में बाधा आयी और हम विज्ञान से वंचित हुए। दूसरा प्रमुख कारण है कि हमारे ब्राह्मण वर्ग ने स्त्रियों व शूद्रों को शिक्षा की प्राप्ति अर्थात् अध्ययन-अध्यापन से वंचित कर दिया जिससे समाज का 75 से 80 भाग अशिक्षित रहने के कारण ज्ञान का विकास होने के स्थान पर दिन-प्रतिदिन ह्रास होता गया।

हमारे यूरोप के बन्धु धर्म-कर्म को छोड़कर ज्ञान-विज्ञान की उन्नति में लग गये और लगभग डेढ़-दो शताब्दियों में ज्ञान-विज्ञान को शिखर पर पहुंचा दिया। हम समझते हैं कि सारा संसार उन बुद्धिजीवी विज्ञानियों का सदैव आभारी है और रहेगा। हमने पहले भी कहा है कि ज्ञान व विज्ञान का आधार भाषा है। यूरोप की भाषा वहां के वैज्ञानिकों ने नहीं बनाई। उनके समय में प्रयोग की जा रही भाषा वहां पहले से प्रचलित भाषाओं की रूपान्तरित अवस्था थी। जिन भाषाओं से वह रूपान्तरित हुईं, वह भाषा व भाषायें भी अपने से पूर्व प्रचलित भाषाओं के आधार पर अस्तित्व में आईं और पीछे चलते-चलते हम सृष्टि के आरम्भ में पहुंचते है जब ईश्वर ने मनुष्यों को उत्पन्न किया था। सृष्टि के आरम्भ काल में ईश्वर से अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों के सामने सबसे पहली समस्या भाषा की हो सकती थी। बिना भाषा के बोला नहीं जा सकता। भाषा के बिना सोचा ही नहीं जा सकता क्योंकि सोचने या विचार करने के लिए भी भाषा की आवश्यकता होती है। सोचना पहले होता है और बोलना बाद में। अतः जब सोचना ही नहीं होगा तो भाषा बोलने या बनाने का काम मनुष्यों के लिए सर्वथा असम्भव है। हर चीज अपने कारणों से बनती है। कारण से कार्य होता है व हर कार्य का कारण अवश्य होता है। भाषा का कारण क्या हो सकता है तो पता चलता है कि भाषा का कारण अर्थात् बनी बनाई भाषा मनुष्यों को देने वाली कोई चेतन सत्ता ही हो सकती है। मनुष्य वा मनुष्येत्तर पशु, पक्षी आदि प्राणी भाषा का निर्माण कर नहीं सकते फिर अन्य कारण क्या बचता है। वह चेतन कारण वही है जिसने इस सृष्टि को रचा है, जल-थल व नभ को बनाया है व वायु को बहाया है। वनस्पतियां बनाईं और हम मनुष्यों को भी बनाया था और आज भी बना रहा है। आज के वैज्ञानिक भी मनुष्य के निर्माण व रचना के विज्ञान को पूरी तरह समझ नहीं सके, बनाना तो बहुत दूर की बात है। यह सुस्पष्ट सिद्धान्त है कि कोई भी बुद्धिपूर्वक रचना किसी न किसी चेतन सत्ता द्वारा ही होती है। जड़ पदार्थो से किसी बुद्धिपूर्वक रचना का होना सम्भव नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि भाषा को भी उसी चेतन तत्व ने बनाया है जिसने मानव शरीर व इसमें आंख, नाक, कान, मुख, जिह्वा, दांत, गला, उदर, वाणी-यन्त्र बनायें हैं एवं शब्दोच्चार की क्षमता व शक्ति प्रदान की है। वह भाषा ईश्वर से वेदों के ज्ञान के साथ हमारे चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को प्राप्त हुई थी। उन्होंने उसका प्रचार व शिक्षण किया जिससे वह सर्वत्र फैल गई और समय-समय पर देश व काल के प्रभाव से परिवर्तित होती रहीं। कहीं उसने हिन्दी का, कहीं अंग्रेजी का, कहीं रूसी व कहीं चीनी का तथा कहीं अरबी, फारसी व उर्दू का रूप ले लिया। यह परिवर्तन कई-कई शताब्दियों में हुआ करते हैं। भाषा प्रदान करने व सृष्टि को बनाने वाली वह चेतन सत्ता ईश्वर है और उसका स्वरूप देश-विदेश में अस्तित्व में आये मानव निर्मित मत-मजहब-सम्प्रदाय या धर्म में विहित विचारों के अनुरूप न होकर से भिन्न व पृथक है। वह चेतन सत्ता और उसका स्वरूप वस्तुतः सृष्टिकर्ता, मनुष्यों व सभी प्राणियों का जनक, जीवों व प्राणियों का माता-पिता के समान, सबका आदि गुरू, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सत्य, चित्त व आनन्दस्वरूप, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अविनाशी, अजर, अमर, अभय, पवित्र आदि ईश्वर है। हमारे इस विवेचन का उद्देश्य यह बताना है कि हमारे सभी वैज्ञानिक विज्ञान की खोज जिस भाषा में भी करें, उसका आदि कारण ईश्वर प्रदत्त वेदों की भाषा है जो संस्कृत के समान प्रायः है। हम यह बताना चाहते हैं कि सारी दुनियां को भाषा भारत से मिली है। अतः सारी दुनियां के मत-मजहब व सम्प्रदाय भाषा के मामले में ईश्वर के बाद हमारे देश के प्राचीन ऋषि-मुनियों के ऋणी हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात हम देखते है कि यूरोप के वैज्ञानिक प्रचलित मत-मजहब-सम्प्रदाय तथा धर्म आदि के चक्रव्यूह में फंसे नहीं और पूरी निष्ठा व समर्पण से विज्ञान की सेवा की जिसका परिणाम वर्तमान की उपलब्धियां हैं। हमारे इन वैज्ञानिक बन्धुओं की उपलब्धियों से अन्ध-विश्वासों, अज्ञान व कुरीतियों में निष्ठा रखने वाले मत-मतान्तरों के व्यक्ति भी लाभान्वित हो रहे हैं। अतः अब तक हुई सभी प्रकार की विज्ञान की उन्नति का श्रेय यूरोप के वैज्ञानिकों को है जिन्होंने अन्ध-विश्वासों में फंसे बिना स्वतन्त्र सोच से अपना कार्य किया। महाभारत काल के बाद हमारे आर्यावर्त्त भारत में स्वतन्त्र सोच व निष्ठा की कमी व अन्धविश्वासों, कुरीतियां व अज्ञान आदि का प्राबल्य वैनानिक प्रगति में मुख्य रूप से बाधक रहा।

एक प्रश्न यह भी उठता है कि विगत लगभग 200 वर्षों में विज्ञान ने कल्पनातीत विकास, उन्नति या विस्तार किया है तो फिर विगत लगभग 1.96 अरब वर्षों में विज्ञान ने यह ऊचाईयां प्राप्त क्यों नहीं की?हम देखते हैं कि महाभारत काल के बाद देश एवं विश्व में ज्ञान का पराभव हुआ। महाभारत काल में तो आज से भी अधिक ज्ञान-विज्ञान व विधायें होनी चाहिये थी जिसका कारण एक ओर 1.96 अरब वर्षों का समय मिला जबकि दूसरी आधुनिक विज्ञानियों ने मात्र 200 वर्षो के समय में विज्ञानों को वर्तमान शिखर तक पहुंचा दिया। सम्प्रति जो जानकारियां या प्रमाण उपलब्ध हैं उनसे यह पता नहीं चलता कि महाभारत काल व उससे पूर्व आज से अधिक विज्ञान विकसित था। जितने बड़े विमान आज हैं, रेलगाड़िया व कम्प्यूटर, दूरदर्शन, मोबाइल फोन, अन्तरिक्ष यान, मिसाईलें, तथा पृथिवी के कृत्रिम उपग्रह आदि हैं, उनका अस्तित्व महाभारत काल व उससे पूर्व भी था, इसका कोई प्रमाण किसी के पास नहीं है। जो भी हो, यूरोप के वैज्ञानिक सारी दुनियां के लोगों से बधाई व प्रशंसा के पात्र हैं।

महाभारत काल के बाद पतन का काल आरम्भ हुआ। मूर्तिपूजा, अज्ञान, कुरीतियां, मृतकों का श्राद्ध, बाल विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबन्ध, नियोग प्रथा की समाप्ती, वर्णव्यवस्था की समाप्ती व जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का आरम्भ, स्त्रियों व शूद्रों के अध्ययन अध्यापन पर प्रतिबन्ध, यज्ञों में हिंसा, मांसाहार, सुरापान का प्रचलन आदि अनेक बुराईयां समाज में उत्पन्न हुईं। यद्यपि इस बीच देश में भगवान, बुद्ध, भगवान महावीर व स्वामी शंकराचार्य जैसे प्रकाण्ड विद्वान व धर्म संशोधक हुए, परन्तु देश का पराभव चलता रहा। ईश्वर, जीवात्मा व जड़ प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को भुला दिया गया और उसके स्थान पर अज्ञान परोसा जाने लगा। भारत में अज्ञान का अन्धकार छाया तो सारी दुनिया मे भी यही स्थिति पैदा हुई। इस कारण पारसी मत, यहूदी मत, ईसाई मत व इस्लाम मत का प्रादुर्भाव हुआ। इन मतों में ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि के सम्बन्ध में जो मान्यतायें हैं उन्हें वेदों से भिन्न, असत्य या अयथार्थ कह सकते हैं। ईश्वर व जीव के अविनाशी, अजन्मा, अमर व नित्य स्वरूप को पूरी तरह से भुला दिया गया। वेदों का स्थान पुराणों ने ले लिया। पुनर्जन्म का सिद्धान्त भी आधा अधूरा यत्र तत्र दृष्टिगोचर होता है। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अशिक्षा, फलित ज्योतिष, यज्ञों में हिंसा, बाल विवाह आदि कारणों से देश पहले यवनों का तथा उसके बाद अंग्रेजों का गुलाम हो गया। इस अवधि में देशवासियों ने असीम दुःखों व अपमान को सहन करना पड़ा। यथार्थ व सत्य वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रायः लोप हो चुका था। यदि कहीं प्रचार था तो असत्य मत व मूर्तिपूजा आदि वेद विरूद्ध मान्यताओं व सिद्धान्तों का जिससे देश व समाज दिन-प्रतिदिन कमजोर हो रहा था। यद्यपि यूरोप व अन्य देशों के जो मत-सम्प्रदाय थे उनका स्वरूप भी भारतीय अवैदिक मतों के समान था परन्तु वे संगठित व धर्मान्तरण जैसे लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे थे। उनकी संख्या बढ़ रही थी तथा हिन्दू मत के अनुयायियों की संख्या घट रही थी। इनसे व इनके भावी परिणामों से हिन्दू लोग अनभिज्ञ व असावधान थे।

ऐसे अन्धकार के समय में में सूर्योदय की भांति महर्षि दयानन्द भारत की धरती पर प्रकट हुए। उन्होंने प्रज्ञाचक्षु गुरू विरजानन्द की मथुरा स्थित कुटिया में अढ़ाई वर्ष रहकर अष्टाध्यायी, महाभाष्य व निरूक्त का अध्ययन कर उनकी सहायता से वेद एवं वैदिक आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन,

(शेष अगले अंक में)

महामहिम राष्ट्रपति को स्वामी दयानन्द जी का चित्र व वैदिक साहित्य भेंट किया गया

रविवार, 3 नवम्बर 2013, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के प्रतिनिधि मण्डल ने राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से भेंट की तथा दीपावली की शुभकामनाओं के साथ उन्हें बताया कि आज महर्षि दयानन्द जी का 130 वां बलिदान दिवस भी है, उन्हें महर्षि दयानन्द जी का चित्र व वैदिक साहित्य भेंट करते बायें से श्री महेन्द्र भाई, श्री ओम सपरा, एडवोकेट, श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन' व श्री यशोवीर आर्य।

उत्तरी दिल्ली मण्डल की बैठक सम्पन्न

श्री ओम सपरा (एडवोकेट) प्रधान निर्वाचित

रविवार, 17 नवम्बर 2013, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल(पंजीकृत) की बैठक आर्य समाज,गुजरांवाला टाउन,पार्ट-2,दिल्ली में श्री सुरेन्द्र आहूजा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।आचार्य प्रेमपाल शास्त्री के प्रस्ताव पर आगामी 2 वर्ष के लिये श्री ओम सपरा को मण्डल का प्रधान सर्वसम्मति से चुना गया तथा उन्हें शेष कार्यकारिणी व अन्तरंग सभा का गठन करने का अधिकार दिया गया । आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने पर सभी ने जोर दिया । चित्र में श्री सुरेन्द्र आहूजा,आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,डा.अनिल आर्य,श्रीमती रचना आहूजा व श्री विनेश आहूजा । श्री सन्तोष शास्त्री व श्री हीराप्रसाद शास्त्री ने संचालन किया ।

गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद चलो

गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, रविवार, 22 दिसम्बर 2013 को प्रातः 9 बजे से 12.30 बजे तक मनाया जायेगा। सभी आर्य बन्धु सपरिवार दर्शन देवें ।

–सत्यभूषण आर्य, संयोजक – प्रेमकुमार मितल–मंत्री

दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान में बुधवार, 25 दिसम्बर 2013 को प्रातः 8 बजे यज्ञ श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली में होगा, शोभायात्रा प्रातः 10 बजे शुरू होगी तत्पश्चात श्रद्धांजलि सभा रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, दिल्ली में होगी। हजारों की संख्या में पहुंचे।

–महाशय धर्मपाल, प्रधान – राजीव आर्य, मंत्री

गाजियाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा,गाजियाबाद के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर रविवार 22 दिसम्बर 2013 को प्रातः 10 बजे शम्भु दयाल संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में यज्ञ, तत्पश्चात शोभा यात्रा निकलेगी, दोपहर 2 बजे रामलीला मैदान, घन्टाघर में सार्वजनिक सभा होगी। हजारों की संख्या में पहुंचे।

– सुभाष सिंघल–प्रधान – प्रवीन आर्य–महामंत्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 35 वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में
युवा विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के ब्रह्मत्व में आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान की अध्यक्षता में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ

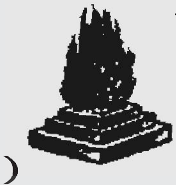

आशीर्वाद : स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी दिव्यानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्ममुनि जी

अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24, 25, 26 जनवरी 2014 (शुक्र, शनि व रविवार)

स्थान : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली-34 (निकट कोहाट एन्कलेव मैट्रो स्टेशन)

विराट् शोभा यात्रा, शुक्रवार 24 जनवरी, 2014, प्रातः 10.30 बजे

शुभारम्भ : रामलीला मैदान, पी.यू.ब्लाक, पीतम पुरा, दिल्ली से प्रारंभ होगी

मुख्य आकर्षण

आर्य महिला सम्मेलन ● राष्ट्रीय वेद सम्मेलन ● शिक्षा-संस्कृति निर्माण सम्मेलन
संगीत संध्या ● व्यायाम प्रदर्शन ● राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

प्रातः से रात्रि निरन्तर तीनों दिन ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था

1.बाहर से आने वाले आर्य बन्धु व आर्य युवक अपने पधारने की व संख्या के बारे में 31 दिसम्बर2013 तक सूचित करने की कृपा करें जिससे भोजन व आवास आदि का उचित प्रबन्ध किया जा सके।
2.कृपया यजमान बनने के इच्छुक आर्य बन्धु , आर्य समाजें अपना यज्ञकुण्ड 31 दिसम्बर 2013 तक फोन न०. 9891142673, 9868664800, 9871581398, 9999995017 पर आरक्षित करवा लें।

हज़ारों की संख्या में पहुँचकर आर्यसमाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत), नई दिल्ली

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007 दूरभाष : 9810117464, 9013137070, 9868064422, 9958889970

आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग व अमर कालोनी का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

रविवार, 17 नवम्बर 2013, आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग, दिल्ली का 24 वां वार्षिक उत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। चित्र में डा. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए। आचार्य डा. शिवदत पाण्डेय के प्रवचन व श्री उपेन्द्र आर्य के भजन हुए। मंत्री श्री रवि चड्डा ने कुशल संचालन व प्रधान श्री बलदेव जिन्दल ने आभार व्यक्त किया। द्वितीय चित्र में आर्य समाज अमर कालोनी, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर भजनोपदेशिका श्रीमती कविता रानी को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, श्री चतरसिंह नागर, प्रि. अर्चना पुष्करना, श्री गोबिन्दलाल नागपाल, श्री ओमप्रकाश छाबड़ा व प्रधान श्री जितेन्द्र डावर।

आर्य समाज अशोक विहार, फेज-3 व इन्दिरापुरम का उत्सव सौल्लास सम्पन्न

रविवार, 24 नवम्बर 2013, आर्य समाज अशोक विहार, फेज-3, दिल्ली का उत्सव सम्पन्न हुआ। माता प्रेम सब्बरवाल, श्री विमल वधावन, गायत्री योगाचार्य, आचार्य सुखदेव तपस्वी आदि उपस्थित रहे। आर्य समाज, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद का उत्सव सम्पन्न हुआ। डा.जयेन्द्र आचार्य ने यज्ञ करवाया। डा.अनिल आर्य, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री जयपाल त्यागी, श्री प्रवीन आर्य, श्री तेजपाल सिंह, श्री यशोवीर आर्य, श्री यज्ञवीर चौहान, श्री ओमप्रकाश आर्य, श्रीमती लक्ष्मी सिन्हा, श्री अजय पथिक, श्री सौरभ गुप्ता आदि उपस्थित रहे। डा.वीरपाल विद्यालंकार ने संचालन किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 150 आर्य युवक सम्मलित हुए।

आर्य समाज दिलशाद गार्डन व मालवीय नगर का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 17 नवम्बर 2013, आर्य समाज, दिलशाद गार्डन, दिल्ली के उत्सव पर श्रीमती कृष्णा आर्या को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, श्री जवाहर भाटिया, श्रीमती सरोज भाटिया, श्री सुरेश मुखीजा व श्री यशपाल शास्त्री। पं. श्यामवीर राघव के भजन हुए। द्वितीय चित्र में आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली के उत्सव पर सम्बोधित करते डा.अनिल आर्य। प्रधान श्री एच.एस.मिथरानी, श्री सुभाष चांदला, श्री विनोद कद, श्री लाजपतराय बत्रा, श्री आरक्षित शास्त्री, माता सावित्री भसीन, श्री मदनमोहन वर्मा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. कर्मठ आर्य नेता श्री रामजीलाल गोयल (विकासपुरी) का गत दिनों निधन।
2. श्रीमती चांद रानी साही (विकासपुरी) का गत दिनों निधन।
3. श्रीमती सरला शर्मा (बहन श्री सुदर्शन शर्मा) का गत दिनों निधन।
4. श्री वीरेन्द्रप्रसाद कपूर (जनकपुरी) का गत दिनों निधन।
5. श्रीमती प्रभा शर्मा (धर्मपत्नि श्री जयदेव शर्मा, फरीदाबाद) का गत दिनों निधन।
6. श्री रामशंकर आर्य (पिता श्री वेदप्रकाश शास्त्री, फरीदाबाद) का गत दिनों निधन।
7. श्री बृजेश गुप्ता (गाजियाबाद) का गत दिनों निधन हो गया।
8. श्री द्वारका नाथ रावत (सोनीपत) का गत दिनों निधन हो गया।

युवा उद्घोष की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज सैनिक विहार में गायत्री यज्ञ सम्पन्न

रविवार, 24 नवम्बर 2013, आर्य समाज, सैनिक विहार, दिल्ली में गायत्री महायज्ञ माता आशा जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। डा. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए। प्रधान श्री सुनील गुप्ता, श्रीमती कृष्णा सपरा, श्री सुदेश खुराना, श्रीमती राधा, श्री विनोद गुप्ता, श्री अश्विनी भाटिया बधाई के पात्र हैं।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970